फाँसी नहीं, हमें गोली से उड़ायें

[लाहौर षड्यंत्र केस के अभियुक्तों के खिलाफ मुख्य दोष था बादशाह के खिलाफ युद्ध। इस आधार पर फाँसी की सज़ा पाए तीनों क्रान्तिकारियों – भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव – ने फाँसी से तीन दिन पूर्व इस पत्र द्वारा पंजाब के गवर्नर से मांग की थी उन्हें जंगी कैदियों की हैसियत में फाँसी न देकर गोली से उड़ा दिया जाए। – संपादक]

सेवा में,

गवर्नर पंजाब,

शिमला।

श्रीमान,

उचित सम्मान सहित, हम निम्नलिखित बातें आपके ध्यान में लाना चाहते हैं:–

हमें 7 अक्टूबर 1930 को ब्रिटिश अदालत, एल.सी.सी. ट्रिब्यूनल, ने फाँसी की सज़ा दी थी, जो भारत में अंग्रेजी शासन के प्रधान वायसराय द्वारा घोषित किए गए 'स्पेशल लाहौर कांस्पिरेसी केस आर्डिनेंस' के अधीन स्थापित हुआ था, और हमारे विरुद्ध मुख्य दोष सम्राट पंचम जार्ज, इंग्लैंड के सम्राट के विरुद्ध युद्ध करने का लगाया गया है।

उक्त अदालत के निर्णय से दो बातें स्पष्ट हो जाती हैं। पहली यह कि ब्रिटिश राष्ट्र और भारतीय राष्ट्र के बीच युद्ध चल रहा है। और दूसरी यह कि हम लोगों ने वास्तव में उस युद्ध में भाग लिया है, इसलिए हम युद्ध बन्दी हैं।

दूसरी बात कुछ आत्मश्लाधा सी जान पड़ती है, किन्तु फिर भी हम उसे स्वीकार करते ही नहीं, बल्कि इसके लिए अपने को महान भाग्यशाली समझते हुए अपने भावों को नहीं दबा सकते।

पहली बात के सम्बन्ध में हम कुछ बिस्तार में जाने को बाध्य हैं। उक्त वाक्य में जैसा प्रकट होता है वैसा युद्ध दिखाई नहीं देता है। हम नहीं जानते कि युद्ध करने का अर्थ अदालत में क्या लगाया, किन्तु हम इसे यथार्थ अर्थों में स्वीकार करना चाहते हैं, किन्तु अपना विचार स्पष्ट करने के लिए कुछ विस्तृत व्याख्या की आवश्यकता जान पड़ती है।

युद्ध की स्थिति

हम यह कहना चाहते हैं कि युद्ध छिड़ा हुआ ह और यह तब तक चलता रहेगा जब तक कि मुट्ठी भर शक्तिशाली लोगों ने श्रमिकों और जनसाधारण के प्राकृतिक साधनों पर अपने स्वार्थसाधन के लिए अपना एकाधिकार जमा रखा है। चाहे ऐसे व्यक्ति अंग्रेज पूंजीपति हों चाहे हिन्दुस्तानी, उन्होंने आपस में मिलकर लूट जारी कर रखी है। चाहे भारतीय पूंजीपतियों के द्वारा ही निर्धनों का खून चूसा जा रहा हो तो भी इस स्थिति में कोई अन्तर नहीं पड़ता। यदि वर्तमान सरकार नेताओं और भारतीय समाज के चौधरियों को थोड़ी-सी सुविधाएं देकर उनको अपनी ओर मिला लेने में सफल जो जाए ओर समझौता हो जाए, इससे भी स्थिति बदल नहीं सकती, तथा जनता पर इसका प्रभाव बहुत कम पड़ता है। हमें इस बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि नौजवानों के साथ विश्वासघात किया गया है। इस बात का भी दुख नहीं यदि हमारे राजनीतिज्ञ पथ-भ्रष्ट हो गए हैं और वे समझौते की बातचीत में उन गृहहीन, असहाय और दरिद्र महिला-श्रमिकों को भूल गए हैं, जो दुर्भाग्यवश क्रान्तिकारी दल की मेंबर समझी जाती हैं, और जिन्हें हमारे राजनीतिज्ञ नेता अपना

दुश्मन समझते हैं क्योंकि उनके विचार से वे हिंसा में विश्वास रखती हैं। इन वीर देवियों ने निस्सन्देह अपना सब कुछ बलिदान कर दिया है। उन्होंने ने अपने पतियों, भाईयों और जो भी उनका सबसे निकटतम और सबसे प्यारा था, अपनेआप सहित सब कुछ न्यौछावर कर दिया, किन्तु तुम्हारी सरकार उन्हें बागी समझती है। कोई बात नहीं, यदि तुम्हारे एजेंट इतने गिर जाए कि झूठो कहानियां गढ़-गढ़कर उन्हें तथा उनकी पार्टी को बदनाम करें, तो भी यह युद्ध जारी रहेगा।

युद्ध के तरीके का चुनाव

हो सकता है कि यह युद्ध भिन्न-भिन्न पड़ावों में भिन्न-भिन्न रूप धारण करे। किसी समय में यह सीधी टक्कर, कभी खुफिया, कभी निरोल आंदोलनकारी और कभी इतना भयानक हो कि जीवन व मृत्यू की बाज़ी लगा सकता है। चाहे यह जिस रूप में हो, खूनी अथवा थोड़ा शांतिपूर्ण, इसका चयन आप पर निर्भर है। आप इसके रूप का चयन अपनी मर्जी के मुताबिक कर सकते हो। इसमें छोटी-छोटी बातों की परवाह नहीं की जाएगी। परन्तु यह युद्ध, इन छोटी-छोटी बातों में पड़े बिना व फिज़ूल नैतिक सिद्धांतों में उलझे बिना लगातार चलता रहेगा। नए उत्साह, बढ़ी हुई दृढ़ता और अटल विश्वास के साथ यह युद्ध तब तक चलता रहेगा, जब तक कि समाजवादी प्रजातंत्र की स्थापना नहीं हो पाती और वर्तमान समाज के स्थान पर नए सिरे से समाज का ऐसा पुनर्गठन नहीं होता, जिससे स्वार्थियों के स्वार्थ साधन बन्द हो जाऐं और समाज एवं मानव जाति को सच्ची शांति मिल सके।

बहुत जल्दी अंतिम युद्ध लड़ा जाएगा और उसका फैसला अंतिम होगा। साम्राज्यवाद और पूंजीवादी लूट अब कुछ दिनों की मेहमान है। यह युद्ध न तो हमारे साथ प्रारंभ हुआ है और न ही हमारे जीवन के साथ खत्म होगा। यह तो ऐतिहासिक कारणों व वर्तमान समाज की असंगतियों के परिणामस्वरूप हुआ है। हमारी छोटी सी कुर्बानी तो बस इस ऐतिहासिक लड़ी की एक कड़ी है, जिसको जतिन दास की बेमिसाल कुर्बानी ने, शहीद भगवती चरण जी की अति भयानक परन्तु पवित्र व महान कुर्बानी ने तथा हमारे महबूब जरनल आज़ाद की शानदार शहादत ने चार चाँद लगाए हैं।

फाँसी नहीं गोली से उड़ाया जाए

जहाँ तक हमारी किस्मत का प्रश्न है, हम दृढ़ निश्चय के साथ कहना चाहते हैं कि आपने जब हमें फाँसी देने का आदेश दिया है तो आप अवश्य ही इसे पूरा करेंगे। आपके हाथ में शक्ति है, और दुनिया में शक्ति सबसे बड़ा औचित्य है। हम जानते हैं कि आपके निश्चय को पूर्ण करने के लिए 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाला मुहावरा आपके सामने है, और आप उसी के अनुसार काम कर रहे हैं। इस कथन को सिद्ध करने के लिए हमारे मुकदमे की कार्यवाही ही काफी है। हम आपको यह बताना चाहते हैं कि आपकी अदालत के निर्णय के अनुसार हमारे पर युद्ध छेड़ने का दोष है और इस कारण हम जंगी कैदी हैं। इसलिए हम माँग करते हैं कि हमारे साथ वैसा ही बर्ताव किया जाए, अर्थात हमें फांसी पर लटकाने की बजाय गोली से उड़ाया जाए। अब यह सिद्ध करना आपका काम है कि आपका वास्तविक मतलब वही है जो आपकी अदालत ने कहा है।

हम नम्रतापूर्वक आपसे यह निवेदन करते हैं कि आप अपने सैन्य विभाग को आदेश दें कि हमें गोली से उड़ाने के लिए एक सैन्य टुकड़ी भेज दें।

आपके,

भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव